सं शो वि शिहसार/5-87/7366 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं व कुलपति, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, के श्रमिक श्री राजेन्द्र सिंह, मार्फत मजदूर एकता यूनियन, नागोरी गेट, हिसार तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इस के बाद लिखित मामले में कोई श्रीकोगिक विवाद है;

भीर **भूकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को** त्यावनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, ग्रन, भौदोगिक विनाद श्रिष्ठिनियम, 1947, की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अपना सम्बन्धित मामला है:—

नयां श्री राजेन्द्र सिंह की सेंबाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? सं० भो•वि०/एफ.डी./173-86/7373—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० मुख्य प्रशासक, प्रतिवाद मिश्रित प्रशासन, एन०आई०टी० फरीदाबदा, के श्रीमक श्री हरीश चन्द, मार्फत भारतीय मजदूर संघ, विश्वकर्मा भवन, फरीदाबाद, तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस बिवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, भोबोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादमस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्गय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अवना सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री हरीश चन्द की सेंबाओं का समापन न्यामोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं बो बि एफडी 16-87/7380. - चृंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि बैलमाऊंट रज्वड़ इण्डस्ट्रीज, 58-बी, इण्डस्ट्रीयल एरिया, एन आई ब्टींक, फरीदाबाद, के अधिक श्री हरिनन्दन, मकान नंव 1011, इन्दिरा कालोनी, मथुरा रोड़, फरीदाबाद तथा धसके प्रकथकों के मध्य दसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंबि हरियाणा के राज्यपास इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसिये, शव, श्रीकोगिक विवाद श्रिष्ठितियम, 1947 की खारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राध्यपाश्च १६के द्वारा सरकारी श्रीक्ष्मभग सं 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साम पढ़ते हुए श्रीक्ष्मभग सं 11495-जी-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रीवित्यम की धारा 7 के श्रीत गिरुत अस न्यायानय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिषंध एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है बा विवाद श्री सम्बन्धित मामला है :---

क्या भी हरिनन्दन की सेनाओं का समापन न्याबोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? दिनांक 20 फरवरी, 1987

सं शो वि एफडी 21-87/1592 — चूंकि हरिबाणा के राज्यपाल की राय है कि मै वेला माऊंट रब्बड़ इण्डस्ट्रीज, 58-बी, एन० प्राई०टी, फरीदाबाद, के अमिक श्री राज कुमार, डी-512, डबुआ कालोनी, फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके के बाद लिखित मामले में कोई श्रीकोणिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव, भौजोगिक विवाद भिन्नित्यम, 1947, की घारा 10 की उपघारा (1) के खंण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों , का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपान इसके द्वारा सरकारी भिन्नित्वना सं० 5415-3-धम 68/15254, दिनांक 20 जून,, 1978, के साथ पढ़ते हुए भिन्नियुणना सं० 11495-जी-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिनियम को घारा 7 के भिन्नीन गठित अम न्यायालय, फरोदाबाद, को विवादगस्त या उत्तरे सुसंगत या उत्तरे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय एवं पंचाट तीन मास में बेने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादगस्त मामला है या विवाद से सुसंगत गयवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्रो रात्र हुमार की सैवार्मी का सनापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?